भारत के फसल-पश्चात परिदृश्य का पुनर्मूल्यांकन

आनंद चन्द्रा

उप संस्थापक और कार्यकारी निर्देशक, आर्य .एजी

भारत के कृषि क्षेत्र को अक्सर फसल-पश्चात नुकसान के चश्मे से दर्शाया जाता है, एक ऐसी कहानी जो दशकों से चली आ रही है। हालाँकि, चर्चाओं में आमतौर पर उद्धृत किए जाने वाले आँकड़े काफी हद तक पुराने शोध पर आधारित होते हैं, जिनमें से अधिकांश तब किए गए थे जब देश का कृषि बुनियादी ढाँचा और क्षमताएँ अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में थीं। इन शुरुआती अध्ययनों ने महत्वपूर्ण नुकसान का संकेत दिया था - ये आँकड़े उस समय के लिए प्रासंगिक थे जब भंडारण सुविधाएँ दुर्लभ थीं, परिवहन नेटवर्क अविकसित थे, और वित्तीय संसाधनों तक पहुँच सीमित थी। आज, भारत का कृषि परिदृश्य विकसित हो चुका है, और वर्तमान संदर्भ की अधिक सटीक समझ के साथ स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करना आवश्यक है।

भारत को फसल-पश्चात बड़े पैमाने पर नुकसान से जूझ रहे देश के रूप में चित्रित करना हाल के वर्षों में की गई महत्वपूर्ण प्रगति को नजरअंदाज करता है। ये सुधार प्रौद्योगिकी में प्रगति, बेहतर बुनियादी ढाँचे और वित्तीय सेवाओं तक बढ़ी हुई पहुँच से प्रेरित हैं। फसल-पश्चात गंभीर नुकसान की कहानी उस प्रगति को नुकसान पहुँचाती है जो हासिल की गई है और भारत के कृषि क्षेत्र की लचीलापन और अनुकूलनशीलता को कम करके आँकती है।

विकसित हो रहा बुनियादी ढांचा और वित्तीय सहायता

हाल के वर्षों में, भारत का कृषि उत्पादन बढ़ा है और इसके साथ ही, कटाई के बाद की उपज के प्रबंधन के लिए बुनियादी ढांचे

में भी काफी सुधार हुआ है। इस सुधार का एक प्रमुख कारक वित्त तक बढ़ी हुई पहुँच है, जिससे किसान बेहतर भंडारण सुविधाओं में निवेश करने में सक्षम हुए हैं। उदाहरण के लिए, लगभग 2004-2005 से, बड़े पैमाने पर वित्तीय संस्थानों ने गोदामों में संग्रहीत वस्तुओं का उपयोग संपार्श्विक के रूप में करना शुरू कर दिया है, जिससे किसानों को अधिक वित्तीय लचीलापन मिला है।

एक प्रमुख विकास खेतों के पास भंडारण समाधानों का विकास रहा है, जो किसानों को बाजार की स्थिति अधिक अनुकूल होने तक अपनी उपज को सुरक्षित रूप से संग्रहीत करने की अनुमति देता है। यह दृष्टिकोण न केवल खराब होने के जोखिम को कम करता है, बल्कि किसानों को अपनी फसल को कब और कैसे बेचना है, इस पर अधिक नियंत्रण भी देता है। उत्पादन के बिंदु के करीब भंडारण सुविधाओं तक पहुँच प्रदान करके, ये समाधान बाजार की कीमतों में उतार-चढ़ाव से जुड़े जोखिमों को कम करने में मदद करते हैं और किसानों को ऑफ सीजन के दौरान कीमतों में वृद्धि का लाभ उठाने में सक्षम बनाते हैं।

इसके अतिरिक्त, वित्तीय क्षेत्र द्वारा संपार्श्विक के रूप में संग्रहीत वस्तुओं का उपयोग करने की इच्छा ने किसानों के लिए ऋण तक पहुँचने के नए रास्ते खोले हैं। वित्त तक यह पहुँच पारिस्थितिकी तंत्र को आधुनिक भंडारण सुविधाओं में निवेश करने औरध्या वैज्ञानिक स्टॉक प्रबंधन प्रक्रियाओं को अपनाने में सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण रही है, जिससे फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने में मदद मिली है। संग्रहीत वस्तुओं के बदले ऋण प्राप्त करने की क्षमता (अपनी खपत की जरूरतों को पूरा करने के लिए) ने किसानों को अपनी उपज को कब बेचना है, इस बारे में सूचित निर्णय लेने के लिए आवश्यक वित्तीय स्थिरता भी प्रदान की है, जिससे उनकी आय क्षमता में और वृद्धि हुई है।

बाजार की खाई को पाट रही है प्रौद्योगिकी

पिछले पांच से छह वर्षों में कृषि प्रौद्योगिकी नवाचारों में उछाल देखा गया है, विशेष रूप से खरीदारों और विक्रेताओं को अधिक प्रभावी ढंग से जोड़ने में। डिजिटल प्लेटफॉर्म कृषि आपूर्ति श्रृंखला को सुव्यवस्थित करने में एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरे हैं, जिससे किसानों के लिए बाजारों तक पहुँचना और अपनी उपज के लिए उचित मूल्य प्राप्त करना

आसान हो गया है। ये प्लेटफॉर्म किसानों और उपभोक्ताओं के बीच सीधे लेन-देन की सुविधा प्रदान करते हैं, बिचैलियों की आवश्यकता को कम करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि किसान लाभ का बड़ा हिस्सा अपने पास रखें।

उदाहरण के लिए, वाराणसी में, आर्य.एजी के लक्षित हस्तक्षेपों ने दिखाया है कि जब किसान अपनी उपज को स्टोर करने और खरीदारों से सीधे जुड़ने में सक्षम होते हैं, तो वे काफी बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। इस मामले में, धान की 'कतरनी' किस्म की खेती करने वाली महिला उत्पादक समूह अपनी उपज को आस-पास की सुविधाओं में संग्रहीत करने और फिर इसे सीधे खरीदारों को बेचने में सक्षम थे, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें खुले बाजार में मिलने वाली कीमत की तुलना में 20ः अधिक कीमत मिली। यह उदाहरण छोटे किसानों के लिए ठोस लाभ पैदा करने के लिए प्रौद्योगिकी और लक्षित भंडारण समाधानों की क्षमता को उजागर करता है, खासकर जब मजबूत बाजार संबंधों के साथ जोड़ा जाता है।

प्रौद्योगिकी की भूमिका केवल लेन-देन को सुविधाजनक बनाने से कहीं आगे तक फैली हुई है। यह आपूर्ति श्रृंखला के भीतर पारदर्शिता और विश्वास बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बाजार की कीमतों, भंडारण की स्थिति और खरीदार की आवश्यकताओं पर वास्तविक समय का डेटा प्रदान करके, ये प्लेटफॉर्म किसानों को अधिक सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं। इस बढ़ी हुई पारदर्शिता से न केवल किसानों को लाभ होता है, बल्कि उत्पादकों और खरीदारों के बीच मजबूत संबंध बनाने में भी मदद मिलती है, जिससे आपूर्ति श्रृंखलाएँ अधिक कुशल और विश्वसनीय बनती हैं।

बिना किसी व्यवधान के दक्षता बनाए रखना

भारत की आपूर्ति श्रृंखलाएँ जितनी मानी जाती हैं, उससे कहीं अधिक कुशल हैं, खासकर जब विखंडित भूमि जोत और बड़ी आबादी और मूल्य के प्रति जागरूक लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखा जाता है। इन चुनौतियों के बावजूद, मौजूदा आपूर्ति श्रृंखलाओं ने अच्छी तरह से अनुकूलन किया है, जिससे उपभोक्ताओं के लिए कीमतें कम रखने की जरूरत को संतुलित किया जा रहा है, जबकि किसानों के लिए उचित मुआवजा सुनिश्चित किया जा रहा है।

उदाहरण के लिए, खेत के गेट के पास छोटे पैमाने के भंडारण समाधानों ने दूर के बाजारों में उपज के परिवहन से जुड़ी लागत और समय को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उपज को जहाँ उगाया जाता है, उसके करीब रखकर, ये समाधान खराब होने के जोखिम को कम करने में मदद करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि किसान अपनी फसलें समय पर बेच सकें। इसके अतिरिक्त, ये स्थानीय भंडारण विकल्प ग्रामीण बाजारों को बड़े खरीदारों के लिए खोलते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्ति होती है। इस क्षेत्र में निरंतर सफलता की कुंजी अनावश्यक व्यवधान पैदा किए बिना मौजूदा प्रणालियों को बेहतर बनाना है। आपूर्ति श्रृंखलाओं में बदलाव से लागत में वृद्धि हो सकती है, जिसका असर अंततः उन लोगों पर पड़ेगा जो सस्ती उपज पर निर्भर हैं। इसके बजाय, दक्षता में और सुधार करने के लिए मौजूदा प्रतिभागियों के साथ काम करना सुनिश्चित करेगा कि भारत का कृषि क्षेत्र फलता-फूलता रहे।

भविष्य की चुनौतियों के प्रति संतुलित दृष्टिकोण

जैसे-जैसे भारत अपनी कृषि क्षमताओं को आगे बढ़ा रहा है, भविष्य की चुनौतियों का संतुलित दृष्टिकोण से सामना करना आवश्यक है। पहले से की गई प्रगति को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, न कि उन प्रणालियों को पूरी तरह से बदलने का प्रयास करना जो प्रभावी साबित हुई हैं। इसका मतलब है कि आपूर्ति श्रृंखला पारदर्शिता को बढ़ाने वाली प्रौद्योगिकियों में निवेश जारी रखना, किसानों को सशक्त बनाने वाले वित्तीय तंत्रों का समर्थन करना और पारंपरिक प्रथाओं और आधुनिक नवाचारों के बीच की खाई को पाटने वाले सहयोग को बढ़ावा देना।

साथ ही, उस अद्वितीय संदर्भ को पहचानना महत्वपूर्ण है जिसमें भारत का कृषि क्षेत्र संचालित होता है। देश का विशाल और विविध परिदृश्य, इसकी बड़ी आबादी के साथ मिलकर, अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है जिनके लिए अनुकूलित समाधान की आवश्यकता होती है। एक मापा दृष्टिकोण अपनाकर जो तकनीकी उन्नति और अनुभव के ज्ञान दोनों को महत्व देता है, भारत अपने कृषि क्षेत्र को इस तरह से मजबूत करना जारी रख सकता है जो टिकाऊ, लचीला और न्यायसंगत हो।

भावी राहः भारतीय कृषि के लिए एक टिकाऊ भविष्य

जैसा कि हम भविष्य की ओर देखते हैं, पहले से मौजूद प्रणालियों को परिष्कृत और बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत का कृषि क्षेत्र लचीला बना रहे, बदलती परिस्थितियों के अनुकूल ढलने में सक्षम हो और संसाधनों के उपयोग में कुशल हो। इसका मतलब है ऐसी तकनीकों में निवेश करना जो आपूर्ति श्रृंखला पारदर्शिता को बढ़ाती हैं, किसानों को सशक्त बनाने वाले वित्तीय तंत्रों का समर्थन करती हैं और पारंपरिक प्रथाओं और आधुनिक नवाचारों के बीच की खाई को पाटने वाले सहयोग को बढ़ावा देती हैं। भारत के फसल-उपरांत परिदृश्य का भविष्य एक संतुलित दृष्टिकोण पर निर्भर करता है जो तकनीकी उन्नति और अनुभव की बुद्धिमत्ता दोनों को महत्व देता है। इस संतुलन को बनाए रखकर, भारत यह सुनिश्चित कर सकता है कि उसका कृषि क्षेत्र फलता-फूलता रहे, न केवल अपनी आबादी को खिलाए बल्कि एक स्थायी और न्यायसंगत तरीके से वैश्विक खाद्य सुरक्षा में योगदान दे। जैसा कि भारत अपनी कृषि प्रथाओं में नवाचार और सुधार करना जारी रखता है, राष्ट्र एक नए युग की दहलीज पर खड़ा है।